NeuSource STARTUP MINDS
HELPING STARTUPS TO START

COMPANY FORMATION

आवश्यक जानकारी और मार्गदर्शन

जिस तरह से किताब का पहला अध्याय हर कहानी की शुरुआत होता है, वैसे ही स्टार्टअप की असली उड़ान सही कंपनी फॉर्मेट को चुनने के बाद शुरु होती है

We Help Startups to Start

कभी सोचा है कि कैसे एक आइडिया विशाल इमारत बन जाता है, जिसे हम 'कंपनी' कहते हैं? एक सपने को साकार करने का सफर, जिसमें जोखिम होता है, चुनौतियां होती हैं, पर अगर सब कुछ सही तरीके से किया जाए तो उस सपने को आकार देने में सफलता भी मिलती है। भारत में कंपनी गठन की प्रक्रिया, उसके पीछे की सोच और उसे आवश्यक जानकारी हर किसी के लिए नहीं होती पर अगर आप में वो जिज्ञासा है, वो उत्साह है, तो आइए, जानते हैं इस जटिल लगने वाले प्रक्रिया को आसान भाषा में। पहला कदम होता है आइडिया का! जी हां, आपके पास एक मजबूत आइडिया होना चाहिए जिस पर आप काम करना चाहते हैं। यह आइडिया आपके व्यापार की नींव होगी। फिर आता है कंपनी के प्रकार का चयन। अगर आप एक स्टार्टअप हैं तो आपको तय करना होगा कि आप OPC में जाना चाहते हैं, LLP में या फिर प्राइवेट लिमिटेड में। हर प्रकार की कंपनी के अपने फायदे और नुकसान होते हैं। अब जब आपने तय किया है कि किस प्रकार की कंपनी बनाना चाहते हैं, तो आपको कुछ कानूनी प्रक्रियाओं का पालन करना होगा जैसे कि आपको अपनी कंपनी का नाम पंजीकृत करवाना होगा, जो कि भारत में रजिस्ट्रार ऑफ कंपनीज़ के पास होता है। साथ ही, आपको कुछ आवश्यक दस्तावेज़ भी तैयार करने होंगे। जैसे कि कंपनी का MOA & AOA, LLP के केस में Partnership Deed। ये दस्तावेज़ आपकी कंपनी की नींव को मजबूती देते हैं और इसकी गतिविधियों और कार्यालय की प्रक्रिया को चित्रित करते हैं। कंपनी गठन केवल कानूनी प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह एक सपने को साकार करने का सफर है। आपकी मेहनत, उत्साह और जज्बा से ही आप इस सफर में सफल हो सकते हैं। इसलिए, सपने देखें और उन्हें साकार करने के लिए प्रतिबंध रहें।

HEMANT GUPTA

Index

हम ने अपनी कंपनी का सही फॉर्मेट चुना है, अब वक्त है दुनिया को दिखाने का कि हम क्या हैं

कंपनी निगमन के लोकप्रिय प्रारूप
(Popular format of company formation for startup)

कंपनी निगमन के अन्य प्रारूप
(Other Format of Company Incorporation)

आपके लिए सर्वोत्तम प्रारूप
(Best Format For You)

कंपनी निगमन के लाभ
(Benefits of Company Incorporation)

शेयर पूंजी और शेयरधारक
(Share Capital & Share Holders)

कंपनी के उद्देश्य
(Objectives of the Company)

निदेशक और उनकी भूमिकाएँ और जिम्मेदारियाँ
(Directors And their Roles and Responsibilities)

निगमन प्रक्रिया
(Incorporation Process)

निगमन के तुरंत बाद अनुपालन
(Compliances Immediate After Incorporation)

नियमित अनुपालन
(Regular Compliances)

गैर-अनुपालन का जुर्माना
(Penalty of Non-Compliances)

Popular format of company formation for startup

स्टार्टअप की सफलता का रहस्य: उचित प्रारूप, निरंतर मेहनत और ठोस इरादे

स्टार्टअप शब्द की जब से देश में धूम मची है, तब से हर कोई इसकी तरह से अपने आपको ढालने की कोशिश में लग गया है लेकिन सिर्फ आइडिया होने से कुछ नहीं होता। जैसे-जैसे समय बदल रहा है, वैसे-वैसे कंपनी के गठन के प्रारूप भी बदल रहे हैं। लेकिन स्टार्टअप की दुनिया में, Private Limited Company का प्रारूप सबसे ज्यादा चर्चा में है। ये वही प्रारूप है जिसमें आपकी कंपनी को एक अलग पहचान मिलती है, जैसे आपका अपना आधार कार्ड। ये आपको लिमिटेड लियाबिलिटी प्रदान करता है। मतलब, अगर कुछ गलत हो गया, तो आपके पर्सनल संपत्ति पर कोई हाथ नहीं डाल सकता। दूसरी बड़ी बात, इसमें शेयरधारक (shareholders) को बेहतरीन फायदे होते हैं, जो कि फंडिंग लेने में काम आते हैं। लेकिन हर अच्छी चीज में कुछ ना कुछ नकारात्मकता होती है। Private Limited Company में भी अधिक प्रशासनिक ज़िम्मेदारियां होती हैं, और कुछ रूल्ज-रेग्युलेशन्स भी जिनकी पालना करना आवश्यक होता है। जो लोग थोड़ा और आज़ादी चाहते हैं, वे लिमिटेड लियाबिलिटी पार्टनरशिप (LLP) में भी अपनी कंपनी को गठित कर सकते हैं। इसमें पार्टनर्स की ज़िम्मेदारी भी लिमिटेड ही होती है, और ये छोटे व्यापारियों के लिए काफी अच्छा होता है। स्टार्टअप की दुनिया में आने से पहले ठीक से सोच-समझकर, सही प्रारूप का चुनाव करें क्यूंकि बाद में ये प्रारूप बदलना इतना आसान नहीं होता और हाँ, कंपनी गठन का प्रारूप फाइनल करना तो सिर्फ एक शुरुआत है, असली मेहनत तो उसके बाद शुरू होती है

1 Proprietorship & Partnership

Proprietorship मतलब एक आदमी की अपनी दुकान। इसमें अलग से Registration और Company Formation का चक्कर नहीं होता। जैसे आपके मोहल्ले में चाचा की चाय की दुकान, वैसी बात। जो दुकान है वो चाचा की है, जो मुनाफा है वो भी चाचा का और जो नुकसान है वो भी चाचा का। Partnership वाला चक्कर थोड़ा अलग है। इसमें Company Formation एक समझौते के आधार पर होता है, जिसे Partnership Deed कहा जाता है, जिसमें ये तय होता है कि किसको क्या मिलेगा, किसकी क्या जिम्मेदारी होगी।

2 Limited Liability Partnership

आपने पुराने जमाने में साझेदारी के Business के बारे में सुना होगा, जिसमें अगर Business डूब जाता, तो साझेदारों की जेब भी साथ में खाली हो जाती थी। लेकिन अब आज के जमाने में LLP नाम का एक नया फॉर्मेट आ गया है Business करने का। इसमें मजेदार बात यह है कि साझेदारों को अब चिंता करने की कोई जरूरत नहीं अगर कुछ गड़बड़ हो भी जाए, तो साझेदारों की खुद की जेब पर कोई असर नहीं होगा।

3 One Person Company

अगर आपके मन में खुद का Business शुरू करने का ख्याल है, पर आप अकेले ही चलाना चाहते हो, तो 'One Person Company' का फॉर्मेट आपके लिए ही है। इसका फंडा सीधा है – सिर्फ एक ही आदमी, वही मालिक, वही सदस्य। यह कंपनी फॉर्मेशन का एक नया कॉन्सेप्ट है जिसे भारत में Companies Act 2013 के तहत लागू किया गया और सबसे बड़ी बात? इसमें वही सारे फायदे मिलेंगे जो बड़ी प्राइवेट लिमिटेड कंपनियों को मिलते हैं।

4 Private Limited Company

जब हम बात करते हैं भारतीय स्टार्टअप्स की, तो ज्यादातर बार आपको "प्राइवेट लिमिटेड कंपनी" जैसा शब्द सुनने को मिलेगा। प्राइवेट लिमिटेड कंपनी भारत में सबसे ज्यादा प्रचुक संगठनात्मक ढांचा है, विशेष रूप से स्टार्टअप्स के लिए, इसे दो लोगों से शुरू किया जा सकता है। जो बड़े बड़े पैसे वाले लोग होते हैं, वह भी इस फॉर्मेट में पैसा लगाने में डरते नहीं हैं क्योंकि इस Format को वे समझते हैं और भरोसा भी करते हैं।

Other Format of Company Incorporation

व्यापार में सफलता चाहिए? पहला कदम हो सही प्रारूप, जैसा प्रारूप, वैसी प्रगति

आज के युग में, जब आप 'स्टार्टअप' की बात करते हैं, तो ज्यादातर लोगों का ध्यान सिर्फ 'प्राइवेट लिमिटेड कंपनी' की ओर जाता है। पर हर प्रकार का बिज़नेस 'प्राइवेट लिमिटेड' फॉर्मेट में नहीं किया जा सकता। बाजार में और भी कुछ 'जबरदस्त' प्रारूप हैं जिनका आम जीवन में भी बहुत महत्व है। पहला है 'ट्रस्ट और सोसायटी'। जब बात समाज की भलाई की हो, और भावना 'सेवा' और 'समर्थन' की, तब इस प्रारूप का महत्व उभर के सामने आता है। चाहे शिक्षा हो, स्वास्थ्य हो या समाज सेवा, यहाँ आपको मिलेगा सच्चा मंच। 'पब्लिक लिमिटेड कंपनी' फॉर्मेट। बड़े खिलाड़ी के लिए! जब आपको लगे कि आपके पास वो 'धमाकेदार' आइडिया है जिसे पूरा देश जानना चाहिए, तो इस प्रारूप की तरफ देखा जा सकता है। 'निधि और एनबीएफसी कंपनी' वाला प्रारूप वहाँ के लिए है जहाँ पैसे की जबान बोली जाती है। जब आप वित्तीय सेवाएं प्रदान करना चाहते हैं, और अगर आप पैसों के साथ जादू करना जानते हैं, तो आपको इस दिशा में जाना चाहिए। 'प्रोड्यूसर कंपनी'। जब किसान और उत्पादक मिलकर बाजार में धमाल मचा देते हैं, जब उन्हें अपनी उत्पादन शक्ति को एक मंच पर लाना होता है, तो वहाँ यह प्रारूप सामने आता है। तो आखिर में कहना सही है की प्रारूप तो बहुत हैं, पर चुनो वही जो आपकी कहानी को सही दिशा दे सके

1 Trust, Society & Section-8

ये Format हैं जहां लोग अच्छे काम के लिए इकट्ठा होते हैं जिन्हे सामाजिक और धार्मिक उद्देश्यों के लिए स्थापित किया जाता है। ट्रस्ट, इसमें किसी संपत्ति को एक विशेष उद्देश्य के लिए रखा जाता है और सोसायटी, विधि द्वारा पंजीकृत होती है और यह शैक्षिक, सांस्कृतिक या अन्य जनकल्याणकारी कार्यों के लिए बनाई जाती है। Section-8 इन्ही उद्देश्यों के साथ Incorporated कंपनी होती है, आज की तारीख में, जब सब सिर्फ पैसा कमाने की रेस में लगे हुए हैं, वहां Trust, Society & Section-8 ऐसे Format हैं जहां समाज की भलाई का उद्देश्य सर्वोपरि है।

2 Public Limited Company

जब आप सुनते हो कि किसी कंपनी के शेयर्स बाजार में उड़ान भर रहे हैं, तो वो होती है पब्लिक लिमिटेड कंपनी। अर्थात् जिसके शेयर्स आम जनता खरीद सकती है। इस फॉर्मेट में कंपनी रजिस्टर करने के लिए कम से कम सात सदस्य होने चाहिए। इस फॉर्मेट की कंपनी को स्टॉक एक्सचेंज में नामांकित करवाया जा सकता है जिसकी वजह से इस फॉर्मेट में सबसे ज्यादा पारदर्शिता और नियम-कानूनों का पालन करना होता है।

3 Nidhi & NBFC Company

अगर आपको 'निधि कंपनी' का नाम सुनाई दे, तो समझ लो ये वह जगह है जहां सदस्य एक-दूसरे को पैसा उधार देते हैं या जमा करते हैं। यह RBI के नियमों से बाहर होती है, लेकिन फिर भी इस पर निगरानी होती है। और अगर 'NBFC' की बात की जाए तो ये एक प्रकार की वित्तीय संस्था होती है जो बैंकिंग जैसे कार्य करती है, लेकिन यह बैंकिंग नियम और विनियमन अधिनियम, 1949 के तहत नहीं आती।

4 Producer Company

'प्रोड्यूसर कंपनी' जैसे एक क्रिकेट टीम में हर प्रकार के खिलाड़ी होते हैं, वैसे ही इस 'टीम' में किसान, खेतिहर और और कुछ ऐसे Landlord होते हैं जो एक ही गोल की ओर दौड़ते हैं। इन सबका एक ही उद्देश्य है - ज्यादा से ज्यादा Agricultural प्रोड्यूस करके बेहतरीन तरीके से बाजार में पहुंचाना। और हां, ये लोग एक-दूसरे की सहायता भी करते हैं, मतलब किसान भैया को अच्छा दाम और बेहतरीन फसल के लिए जरूरी सामग्री भी मिलती है।

Best Format For You

अपने व्यवसाय की आवश्यकताओं और लक्ष्यों के आधार पर व्यवसाय के लिए बेस्ट फॉर्मेट का चयन करें, क्योंकि आपकी सफलता इस पर निर्भर करेगी

स्टार्टअप शुरू करने का सपना आजकल हर दूसरे व्यक्ति का है, पर इसे साकार कैसे किया जाए यह हर किसी को समझ में नहीं आता। अरे भाई, स्टार्टअप तो वही चलता है जिसके पास सही रूपरेखा होती है, और वह सही रूपरेखा चुनना ही असली कला है। अपने स्टार्टअप की सही रूपरेखा चुनने के लिए अपने व्यापार की प्रकृति और उससे जुड़े नियामक आवश्यकताओं को समझना होगा। उदाहरण स्वरूप, फार्मास्यूटिकल जैसे व्यापार में आपको प्राइवेट लिमिटेड कंपनी बनाने की आवश्यकता हो सकती है, क्योंकि यहां पर नियम और प्रावधान ज्यादा होते हैं। फिर आता है स्केलिंग और विस्तार का मुद्दा। यदि आपकी नजर में है वृद्धि और विस्तार, तो आपको वो फॉर्मेट चुनना होगा जो आपको विस्तार में सहायक सिद्ध हो, जैसे कि प्राइवेट लिमिटेड या LLP। इसके बाद आता है नियंत्रण और संचालन में लचीलापन। जब आप चाहते हो कि स्टार्टअप पूरी तरह से आपके नियंत्रण में हो और आपको पूरा लचीलापन मिले, तो सोल प्रोप्राइटरशिप या पार्टनरशिप जैसे फॉर्मेट्स को प्राथमिकता देनी चाहिए। आखिरकार, पैसा भी तो महत्वपूर्ण है, है ना? स्टार्टअप की शुरुआत में आर्थिक समस्याओं का सामना न हो, इसके लिए तुम्हें वह फॉर्मेट चुननी होगी जो तुम्हारी जेब न जलाये। इसलिए भाई, स्टार्टअप की दुनिया में कदम रखने से पहले अच्छी तरह से सोच समझ कर ही फैसला लो।

1 Nature of Business and Regulatory Requirements

व्यापार चलाने के नियम हर किसी के लिए एक जैसे नहीं होते। उदाहरण स्वरूप, चाय की दुकान में स्वास्थ्य और सुरक्षा मानदंड होते हैं, जबकि डिजाइन कंपनी में कॉपीराइट और अन्य समझौतों का मुद्दा होता है। तो फॉर्मेट का चयन करते समय आपको सोचना होगा कि आपका व्यापार कैसा है, और उसकी क्या विशेषताएं हैं और वह फॉर्मेट चुनना होगा जो आपके व्यापार को सबसे ज्यादा फायदा पहुंचाए।

2 Scaling and Expansion

आपके मन में अगर सवाल आता है कि "अरे, मेरी जो दुकान है वो तो पूरे शहर में मशहूर है, क्यों न इसे और बड़ा बनाया जाए?" तो फिर आपको सोचना पड़ेगा कि कैसे बड़ा करें? कहां-कहां शाखा खोलें? कितने लोग रखें? इसके लिए प्राइवेट लिमिटेड कंपनी वाला फॉर्मेट बेस्ट हो सकता है। प्राइवेट लिमिटेड कंपनी आपको वो स्ट्रक्चर देती है जिसमें आप अधिक निवेशकों को भी अपने साथ जोड़ सकते हैं, और व्यवसाय को स्थिरता भी मिलती है।

3 Control and Operational Flexibility

कुछ लोग तो अपने व्यवसाय में राजा की तरह रहना चाहते हैं – अर्थात् सब कुछ उनके हाथ में हो। वही निर्णय लें, वही सब कुछ चलाएं। पर कुछ लोग चाहते हैं कि थोड़ा आराम से जाए, अधिक लचीलापन हो। सोल प्रोप्राइटरशिप, ये वही प्रारूप है जहाँ आप अपने बोस भी होते हैं और अपने कर्मचारी भी। आपको किसी से सलाह लेने की जरूरत नहीं है, पर हां, जो भी हो, अच्छा या बुरा, उसकी जिम्मेदारी भी आपकी ही होती है।

4 Cost and Formalities

जब आप अपना बिजनेस शुरू कर रहे होते हो, तो उसकी पहली परीक्षा होती है इस बात की कि आपके पास कितने संसाधन हैं और किस प्रकार की कंपनी आपके बजट में आ सकती है। पार्टनरशिप और सोल प्रोप्राइटरशिप जैसे फॉर्मेट में, ज्यादा 'तमझाम' नहीं होता लेकिन जब बात होती है प्राइवेट लिमिटेड कंपनी की, इसमें अधिक औपचारिकताएं होती है, लेकिन इसका मतलब ये नहीं कि ये खराब है। बड़े व्यापारिक लक्ष्य और स्केल के लिए यह फॉर्मेट सबसे उपयुक्त हो सकता है।

Benefits of Company Incorporation

Incorporation से आपका बिज़नेस होगा 'don' of the market, no one can refuse!

जब कोई अपना बिज़नेस शुरू करता है, तो उसका पहला सवाल होता है, "अरे, कंपनी रजिस्ट्रेशन करवाऊं या नहीं?" तो जान लीजिये की ये बस एक साधारण कागज़ी कार्यवाही नहीं है, ये तो आपके बिज़नेस को एक पहचान दिलाने वाली प्रक्रिया है। कंपनी रजिस्टर हो जाने के बाद जब आप अपने बिज़नेस की बात करते हो, तो लोग आपको सीरियसली लेते हैं। आपकी बातों में वजन आ जाता है। दूसरी चीज़, लिमिटेड Liability। ये क्या है? सोचो, अगर कल को आपकी कंपनी में कुछ गड़बड़ हो गई, तो आपका नुकसान बस आपकी जमा की गई पूंजी तक ही सीमित रहेगा। आपका घर, आपकी गाड़ी, वे सभी सुरक्षित रहेंगे। फिर आता है Creditability। जब आपकी कंपनी रजिस्टर होती है, तो लोग आप पर भरोसा करते हैं। आपके साथ बिज़नेस करने में उन्हें सुरक्षा महसूस होती है। और ये Creditability ही आपको बड़ी डील्स करने में मदद करती है। अब आओ चौथे फायदे की ओर। जब आपकी कंपनी रजिस्टर होती है तो आपको सरकारी लाभ भी मिलते हैं। हां, सरकार भी आपको प्रोत्साहित करती है और कहती है, "भाई, धंधा बढ़ाओ, तभी तो देश आगे बढ़ेगा!" और आखिरी बात, जब आप पंजीकृत होते हो, तो आपके पास अधिकार होते हैं। आपकी कंपनी का नाम, आपके ब्रांड, ये सभी चीजें सुरक्षित होती हैं। और कोई भी आपकी कड़ी मेहनत को चुरा नहीं सकता। तो समझे, कंपनी पंजीकरण सिर्फ एक कागज़ी कार्यवाही का काम नहीं है। ये तो आपके बिज़नेस को एक नई उचाई देने का जादुई छड़ी है। इसलिए अगर आप अपने बिज़नेस में सज्जे हो, तो पंजीकरण से न डरो और अपने बिज़नेस को एक नई पहचान दो।

1 Separate Legal Entity

जब आप अपनी कंपनी का पंजीकरण कराते हो, तो वो कंपनी अपने आप में एक अलग दुनिया बन जाती है। वह एक पृथक वैधानिक प्रतिष्ठान के रूप में मानी जाती है उसकी अपनी आईडेंटिटी होती है। वह कंपनी अब अपने आप में एक व्यक्तित्व धारण कर लेती है, कंपनी के अपने ही अधिकार और कर्तव्य होते हैं, और वह स्वयं ही दूसरों से वाणिज्यिक संबंध बना सकती है।

2 Limited Liability & Perpetual Succession

कंपनी के पंजीकरण का सबसे बड़ा लाभ है कि उसके मालिकों की जिम्मेदारी सीमित होती है मतलब, अगर कंपनी में कोई गड़बड़ हो गई, जैसे कि नुकसान या कर्ज आ गया, तो मालिक का सिर्फ वही पैसा डूबेगा, जो वह कंपनी में डाल चुका है, बाकी का नहीं। हाँ कंपनी में एक और खास बात है। वे ऐसे ही चलती रहती है, जैसे नौजवान हमेशा नौजवान रहता है। मतलब अगर मालिक चल बसा भी तो कंपनी वैसे की वैसे चलती रहेगी।

3 Credibility & Access to Funding

पंजीकृत कंपनी होने के कारण, वह बाजार में ज्यादा विश्वसनीय मानी जाती है या सिर्फ आम जनता, जो उससे सामग्री खरीदती है, उस पर भरोसा करती है, बल्कि जो बड़े-बड़े निवेशक हैं, जो पैसा लगाते हैं, या बैंक जो लोन देते हैं, वे भी उस पर आंख बंद करके भरोसा करते हैं। पंजीकृत कंपनी भरोसे का प्रतीक होती है। इसलिए, पैसा लगाने और विश्वास करने में आसानी होती है। और हां, जो पंजीकृत नहीं है, उस पर शक की निगाहें होती हैं।

4 Ownership Transferability

जब आपकी कंपनी पंजीकृत होती है, तो उसके शेयरों को बेचना या खरीदना आसान होता है। इसका मतलब है कि यदि आप चाहें तो आप अपनी कंपनी के कुछ हिस्से या पूरी कंपनी को ही बेच सकते हैं। आसानी से स्वामित्व बदल जा सकता है, जैसे बटन दबाकर टीवी का चैनल बदलना। इससे, व्यापार में आज़ादी और फ्लेक्सिबिलिटी का अनुभव होता है।

Share Capital & Share Holders

शेयरधारक वही लोग होते हैं जो व्यवसाय की कहानी को आगे बढ़ाते हैं, जिनका सपना होता है बड़े हिस्से का मालिक बनने का

स्टार्टअप की दुनिया में, शब्द जैसे 'शेयर कैपिटल', 'शेयर धारक', 'प्रमोटर्स' आदि का अपना एक महत्व होता है। सोचो, अंकित बैठा था अपनी गरम चाय के साथ, और आया उसके दिमाग में एक जबरदस्त आइडिया। वह उस आइडिया को लेकर अपने दोस्तों के पास गया और बोला, "दोस्तों, मुझे पैसे चाहिए ताकि मैं अपना सपना सच कर सकूं।" अब वे दोस्त जो पैसा डालते हैं उस सपने में, वे बन जाते हैं 'शेयर धारक' और उसके दोस्त उसमें जो पैसा निवेश करते हैं, वह पैसा 'शेयर कैपिटल' कहलाता है। पर अब, 'प्रमोटर' कौन होते हैं? समझो, अंकित ही है वह आदमी जो पूरी कंपनी को संचालित कर रहा है, उसे आगे बढ़ा रहा है। वह ही है 'प्रमोटर', जिसने पूरी डिजाइन और योजना तैयार की होती है। इसके अलावा, 'अधिकृत शेयर कैपिटल' वह पैसा है जिसे कंपनी जुटा सकती है, जबकि 'पेड-अप' और 'सब्सक्राइब' वह पैसा है जो शेयर धारकों ने दिया है और देने का वादा किया है। इस तरह, ये सभी शब्दों को समझना जरूरी है क्यूंकि इसी पर पूरी कंपनी की नींव रखी जाती है

1 Share Holders & Promotors

शेयर धारक वे व्यक्ति होते हैं जिनके पास कंपनी के शेयर होते हैं। ये कंपनी के मालिक होते है उतने के लिए जितने के शेयर इनके पास हैं, कंपनी को शुरू करने वालों को प्रमोटर्स कहा जाता हैं, कंपनी के प्रमोटर्स, फिर जब उन्होंने खुद ही अपनी कंपनी में पैसा डाला और शेयर खरीदे, तो वे शेयर धारक भी बन गए।

2 Authorized Share Capital

यह वह राशि है जिसके लिए कंपनी अधिकृत है जिसके बराबर के शेयर बेचकर कंपनी अपने लिए पूंजी जुटा सकती है। कंपनी इनकारपोरेशन करते समय आप इस राशि का चुनाव कर सकते है या कंपनी इनकारपोरेशन के बाद भी इसे जरुरत पड़ने पर बढ़ाया जा सकता है इस राशि का चुनाव शुरुआत में ये सोच के किया जाना चाहिए की प्रोमोटर कितने के शेयर खरीद सकते है।

3 Paid-up & Subscribe Share Capital

Paid-up Share Capital (जमा शेयर पूंजी) वह राशि होती है जो शेयर धारकों से वास्तविक में प्राप्त होती है। Subscribe Share Capital (सदस्यता शेयर पूंजी) वह है जिसे शेयर धारकों ने सब्सक्राइब किया है। उदाहरण, अगर कंपनी ने ₹5 लाख के शेयर बेचे, पर सिर्फ ₹3 लाख ही जमा हुए, तो ₹3 लाख ही Paid-up Share Capital होगी।

4 Rights of Share Holders

शेयर धारक कंपनी का मालिक है जिसका पैसा कंपनी में लगा है जब कंपनी में मुनाफा होता है, तो शेयर धारक को अपना हिस्सा मिलता है। अगर कंपनी किसी नई परियोजना पर काम करने का सोचती है, तो शेयर धारक की सहमति के बिना कुछ भी नहीं हो सकता। शेयर धारकों को कंपनी के निर्णय में भाग लेने, लाभ में शामिल होने, और कंपनी की सार्थक जानकारी प्राप्त करने के अधिकार होते हैं।

Objectives of the Company

कंपनी का उद्देश्य यह नहीं होता कि हम बस कुछ काम करें, बल्कि यह होता है कि हम कुछ ऐसा काम करें जिससे हम अपने सपनों को हकीकत में बदल सकें

जब भी हम किसी कंपनी की बात करते हैं, तो उसके पीछे कुछ न कुछ लक्ष्य होता है, जैसे किसी कंपनी का उद्देश्य होता है सेवा प्रदान करना, या अच्छा प्रोडक्ट बनाना। यही उद्देश्य MOA में दर्ज किया जाता है जिससे पता चलता है कंपनी आखिर क्या चाहती है। 'शर्मा जी की चाय' के MOA में यह हो सकता है कि उनका उद्देश्य है बेहतरीन चाय प्रदान करना। वहीं AOA हमें बताता है कि कंपनी अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिए कैसे काम करेगी। इसमें कंपनी के सभी नियम और तरीके दर्ज होते हैं। और फिर है ट्रस्ट और सोसायटी के बायलॉज, जो नॉन-प्रॉफिट संगठनों के लिए महत्वपूर्ण हैं। इससे पता चलता है कि संगठन कैसे और क्यों काम करेगा। अंत में, पार्टनरशिप डीड हमें यह बताता है कि जब दो लोग या अधिक लोग मिलकर व्यापार शुरू करते हैं, तो उनके बीच के समझौते, प्रॉफिट और लॉस का वितरण कैसे होगा। इन सभी दस्तावेजों के माध्यम से कंपनी का उद्देश्य स्पष्ट होता है और यह भी पता चलता है कि कंपनी अपने उद्देश्य को कैसे प्राप्त करेगी।

1 Memorandum of Article (MOA)

आपको दुनिया को यह दिखाना है कि आपकी कंपनी क्या है और वह क्या करेगी। तो, यहाँ पर हमारा दस्तावेज़ 'MOA' मौके पर हाजिर है। इस दस्तावेज़ में लिखा होता है की आपकी कंपनी का नाम क्या है, कहाँ का पता है, और सबसे बड़ी बात – आपकी कंपनी क्या करेगी? बाद में जब भी कोई व्यक्ति या निवेशक कंपनी के बारे में जानना चाहता है, तो वह सीधा MOA देख सकता है और समझ सकता है कि यह कंपनी आखिर में है क्या!

2 Article of Association

AOA वह नियम पुस्तिका है जिसमें कंपनी के 'घर के नियम' लिखे जाते हैं शेयरधारकों के लिए इस 'नियम पुस्तिका' में स्पष्ट रूप से लिखा होता है कि उन्हें कितने पैसे का शेयर मिलेगा, कब मिलेगा और वह कंपनी के किस निर्णय में हाथ डाल सकते हैं और किसमें नहीं।निदेशकों के लिए यह बताती है कि उनका चयन कैसे होगा, उनकी जिम्मेदारियां क्या होंगी और वह कितने समय तक अपने पद पर रहेंगे। कंपनी में हर छोटी-बड़ी बैठक कैसे आयोजित होगी, कितनी बार होगी और उसमें कौन-कौन शामिल होगा, इसका भी पूरा ब्योरा इसी पुस्तिका में दिया जाता है।

3 By Laws

Trust और Society दोनों वो फॉर्मेट हैं जिसमें लोग अच्छे कार्य करने के लिए जुड़ते हैं, जैसे हर गाड़ी का मैन्युअल होता है, वैसे ही इनके लिए 'ByeLaws' होते हैं। 'Bye-Laws' उन नियमों की किताब है जो ये निर्धारित करते हैं कि सदस्य कैसे चुने जाएंगे, कैसे बैठक होगी, पैसे कैसे इकट्ठा किए जाएंगे और इन्हें कैसे खर्च किया जाएगा।

4 Partnership Deed

पार्टनरशिप फर्म बनाने में Partnership Deed की आवश्यकता होती है ये वही दस्तावेज है जो साझेदारों की जिम्मेदारियों और अधिकारों को स्पष्ट करता है। साझेदारों के लिए ये सुनिश्चित करता है की सभी बातें और शर्तें स्पष्ट रूप से लिखित में दर्ज है, जैसे की कौन कितना पैसा लगाएगा, किसे कितना प्रॉफिट मिलेगा, कौन क्या काम करेगा और कौन बिज़नेस को कितना समय देगा इत्यादि, ताकि बाद में 'तुमने मुझसे ये नहीं कहा था' जैसी बातें न हों।

Directors And their Roles and Responsibilities

कभी कभी कुछ जीतने के लिए कुछ हारना भी पड़ता है, और हार कर जीतने वाले को Director कहते हैं

क्या आपने कभी सोचा है कि जो कंपनियाँ हैं, उन्हें कौन चला रहा है? जो छोटे-बड़े फैसले लिए जाते हैं, वो कौन करता है ? हां, आप ठीक समझ गए, हम बात कर रहे हैं कंपनी के निदेशकों की। ये वही लोग हैं जो कंपनी की स्टीयरिंग में हाथ रखते हैं। जब बात होती है एक कंपनी की, तो निदेशक उस कंपनी के कैप्टन की तरह होते हैं। वे ही तय करते हैं कि कंपनी को किस दिशा में ले जाना है। जब हम निदेशक की भूमिका पर नजर डालते हैं, तो ये समझना बहुत महत्वपूर्ण है कि वे सिर्फ फैसला लेने वाले नहीं हैं, बल्कि वे हर फैसले के पीछे की रणनीति और योजना भी तैयार करते हैं। वे ही होते है जो कंपनी के सभी विभागों को संचालित करते है और उन्हें सही दिशा देते है। इसके साथ ही, उनकी जिम्मेदारियां में कंपनी की संपत्ति की सुरक्षा, कर्मचारियों के कल्याण, और स्टेकहोल्डर्स की हित में फैसला लेना भी शामिल है। इसलिए जब अगली बार आप किसी कंपनी के निदेशक का नाम सुनें, तो समझ जाएं कि वह केवल एक पद पर नहीं बैठा है, बल्कि वह पूरी कंपनी का चौकीदार, संरचनात्मक आत्मा और मुख्य संचालक भी है। उन्हें उनके कार्य में उत्कृष्टता के लिए सलाम!

1 Nominee Director in OPC

वन पर्सन कंपनी जहां एक बंदा ही अकेला हीरो है लेकिन अब ये सोचो, अगर इस एकलौते हीरो को कुछ हो जाए तो? तभी तो इसके पास एक ज़रूरत साथी होता है, जिसे बोलते हैं "नामांकित निदेशक"। अगर मुख्य निदेशक अपनी जिम्मेदारियों को नहीं निभा पा रहा है, तो ये नामांकित निदेशक मैदान में उतर के सब कुछ संभाल लेता है। मानो, साइड हीरो हो जो जब जरूरत पड़े तो मुख्य रोल पर आ जाए।

2 Director Identification Number (DIN)

आप चाहते हो कि खुद को 'Director' की तरह पेश किया जाए। लेकिन, सरकार कहती है, "रुको ज़रा! पहले तो 'निदेशक पहचान संख्या (DIN)' प्राप्त करो।" जैसे आधार कार्ड है हर व्यक्ति के लिए, वैसे ही DIN है हर निदेशक के लिए। ये एक Unique नंबर होता है जिसे MCA जारी करता है, इस एक नंबर से आप कितनी भी कंपनी में डायरेक्टर बन सकते हो।

3 Role

कंपनी चलाना कोई बच्चों का खेल नहीं है और इस बड़े खेल में जो असली कारीगर और मास्टरमाइंड होता है Director। अरे, वही तो है जो कंपनी की कश्ती को सही दिशा में ले जाता है, चाहे समुद्र में कितने भी तूफान आएं। जब बात चलती है स्ट्रैटेजी और निर्णय लेने की, तो निदेशक वही आदमी है जो फ्रंट पर खड़ा होता है। बाकी सभी उसके पीछे-पीछे चलते हैं। वह समझता है की कब कौनसी चाल चलनी है ताकि कंपनी हमेशा टॉप पर रहे।

4 Responsibility

कंपनी का हर छोटा-बड़ा काम इसके निदेशकों की जिम्मेदारियों में आता है। वह निर्णय लेते हैं और सुनिश्चित करते हैं कि कंपनी में सब ठीक चल रहा है। निदेशक यह भी देखते हैं कि कंपनी का पैसा कहां और कैसे लग रहा है। निदेशक सुनिश्चित करते हैं कि सभी कानूनी और अन्य मानदंड पूरे हो रहे हैं। निदेशक वही हैं जो बड़े बड़े सपने देखते हैं और फिर पूरी टीम के साथ मिलकर उन्हें सच में बदलते हैं।

Incorporation Process

आज मेरे पास कंपनी है, ब्रांड है, Directorship है, क्या है तुम्हारे पास?

आज के समय में भारत में व्यवसाय शुरू करना मानों एक युवा का सपना हो गया है। लेकिन सपना देखने और उसे पूरा करने में बहुत अंतर है। कंपनी गठन, इसी सपने को साकार करने की पहली सीढ़ी है। सबसे पहली बात होती है कंपनी का नाम चुनने की। भारतीय कंपनी अधिनियम के अनुसार, आपको एक ऐसा नाम चुनना है जो पहले से मौजूद नहीं है, और जो उस कंपनी की पहचान और विशेषता को दर्शाए। दूसरी सबसे महत्वपूर्ण बात है जरूरी कागजात इकट्ठा करना। इसमें आइडेंटिटी प्रूफ, पैन कार्ड, बैंक की पासबुक, MOA, AOA और रेंट एग्रीमेंट शामिल होते हैं। यह सभी दस्तावेज़ सरकार को यह बताने में मदद करते हैं कि आपका व्यवसाय किस प्रकार का है और आप इसे चलाने के लिए पूरी तरह से सक्षम हैं। तीसरा महत्वपूर्ण कदम है डिजिटल हस्ताक्षर प्राप्त करना। डिजिटल ज़माने में जब सब कुछ ऑनलाइन हो रहा है, इसलिए सरकार ने भी डिजिटल हस्ताक्षर को मान्यता दी है। फिर एक महत्वपूर्ण चीज़ है 'डायरेक्टर आइडेंटिफिकेशन नंबर (DIN)'। हर डायरेक्टर को अपना पहचान पत्र होता है, जिसे DIN कहते हैं। यह एक यूनिक नंबर होता है जो प्रत्येक डायरेक्टर को सरकार द्वारा प्रदान किया जाता है। जब आपकी कंपनी पूरी तरह से पंजीकृत हो जाती है, तो सरकार आपको अपना बैंक खाता, पीएफ, ईएसआई पंजीकरण, पैन और टैन जैसी सुविधाएँ स्वचालित रूप से प्रदान करती है और हाँ, व्यवसाय में धैर्य और संघर्ष जरूरी है। तो, बिना डरे, अपने सपनों को पूरा करने की दिशा में कदम बढ़ाए

1 Name Approval

जब आप अपनी नई कंपनी की सोच रहे होते हो, तो उसके लिए भी एक खास नाम की जरूरत होती है। नाम रखने से पहले, वह नाम अवैलेबल है या नहीं, इसकी जाँच पड़ताल होती है। इसके लिए रजिस्ट्रार ऑफ कंपनीज़ का दरवाज़ा खटखटाना पड़ता है। अगर वो नाम पहले से किसी और के पास नहीं है, और वह नाम किसी भी तरह का भ्रांति पैदा नहीं कर रहा है, तो नाम की मंजूरी हो जाती है। लेकिन हां, यह सब अब पेपर पर नहीं होता। डिजिटल युग में यह ऑनलाइन किया जाता है।

2 Required Documents

अगर आप अपनी कंपनी का पंजीकरण करवाना चाहते हो, तो कौन कौन से दस्तावेज़ चाहिए होंगे सबसे पहले तो सभी का पैन कार्ड चाहिए होगा साथ में ID Proof और Address Proof के लिए पासपोर्ट, ड्राइविंग लाइसेंस या वोटर ID भी लगेगा, सभी का पासपोर्ट साइज़ फोटो और साथ किसी व्यापारिक जगह का रेंट एग्रीमेंट और लैंडलॉर्ड की NOC, जिसमे ये लिखा हो की उसे इस एड्रेस पर आपकी व्यापारिक गतिविधियों से कोई प्रॉब्लम नहीं है।

3 Digital Signature

यह डिजिटल हस्ताक्षर क्या चीज़ है, तो समझ लो कि यह एक ऑनलाइन तरीका है जिससे तुम अपने दस्तावेज़ को सुरक्षित तरीके से हस्ताक्षर कर सकते हो। अब, जब तुम अपनी नई कंपनी का पंजीकरण करवाने जाओ, तो तुम्हें कुछ ऐसे दस्तावेज़ सबमिट करने होते हैं, जिन पर डिजिटल हस्ताक्षर की ज़रूरत होती है। और ये सब ऑनलाइन होता है, जिससे तुम्हें कहीं भी जाने की ज़रूरत नहीं पड़ती।

4 Auto Allotment

अब जब आपकी कंपनी रजिस्टर हो जाती है, तो समझो एक सरप्राइज गिफ्ट की तरह कुछ चीज़ें खुद ब खुद साथ में मिल जाती हैं। जैसे बैंक खाता जिसमें तुम अपने बिज़नेस का सारा पैसा जमा कर सकते हो, पीएफ और ईएसआई पंजीकरण, जिससे तुम्हारे कर्मचारियों का भविष्य भी सुरक्षित रहता है। पैन और टैन, जो तुम्हारी कंपनी की पहचान होती है, जिसकी जरूरत हर financial transaction में पड़ती है कुछ स्टेट्स में प्रोफेशनल टैक्स रजिस्ट्रेशन भी मिल जाता है।

Compliances Immediate After Incorporation

भगवान् के लिए ये Compliances मत भूलना, वर्ना Penalties के चक्कर में बिज़नेस का Cash Flow बिगड़ जायेगा

कंपनी को पंजीकृत कराने वालों को लगता है कि बस, जीवन का सबसे बड़ा काम हो गया? लेकिन असली पिक्चर अभी बाकी है अभी तक तो ट्रेलर ही गुज़रा है। समझो, जैसे शादी हो गई तो लगता है सब हो गया, लेकिन असली चुनौतियां तो शादी के बाद शुरू होती हैं। पहला पंजा, ऑडिटर की नियुक्ति। जब तक आपके कंपनी की आर्थिक स्थिति पर कोई तीसरा आदमी नजर नहीं डालता, तब तक कैसे पता चलेगा कि सब ठीक ठाक है या नहीं? यह ऑडिटर ही है जो हर साल कंपनी की वित्तीय स्थिति की जांच करता है, और देखता है कि पैसा कहाँ और कैसे चला गया। दूसरा अध्याय, व्यापार की शुरुआत। पंजीकृत होने का मतलब यह नहीं कि अब आराम कर सकते हैं। अब तो असली कारोबार की शुरुआत होनी है। तीसरा अध्याय, लेखा प्रणाली। जब तक हिसाब-किताब सही नहीं होगा, तब तक सब कुछ अधूरा है, आपको पता होना चाहिए कि कितना पैसा आया, कितना गया और कहाँ गया और चौथा सबसे महत्वपूर्ण, Statutory रजिस्टर। इस रजिस्टर में सभी महत्वपूर्ण जानकारियां रखनी होती हैं, जैसे की किसने कितना पैसा लगाया, कौन कौन से आदमी कंपनी में हैं और उनकी क्या भूमिका है। कंपनी पंजीकृत हो जाने के बाद इन चीजों को नजरअंदाज मत करना। अगर अब तक नहीं किया है तो जल्दी से कर लो, वरना बाद में पछताओगे

1 Auditor Appointment

पहली और मुख्य चीज़! हर कंपनी को पहले 30 दिनों में ही अपने Auditor, अर्थात चार्टर्ड अकाउंटेंट, की नियुक्ति करनी चाहिए। अब सोचो, अगर तुम्हारा एक मित्र हर रुपया-पैसा गिन-गिन के तुम्हें बताए, तो कितने आराम से हो जाएगा! वैसे ही, यह लेखाकार तुम्हारी कंपनी की वित्तीय स्थिति की अच्छी खासी जाँच पड़ताल करता है और आपको और सरकार को ये जानकारी देता है की कंपनी financially कैसा कर रही है।

2 Commencement of Business

कंपनी गठन के बाद, अब बारी है दुनिया को बताने की कि तुम अब व्यापार में हो। यहाँ तक कि अब तुम पूरी तरह से तैयार हो, कंपनी चलाने के लिए, इसके लिए आपको एक घोषणा पत्र (फॉर्म 20-A : Commencement of Business) भी MCA पोर्टल पर दाखिल करना होगा। जिसे कंपनी बनने के 180 दिनों के भीतर दाखिल करना अनिवार्य है।

3 Accounting System

पैसा बहुत महत्वपूर्ण है, भाई! इसलिए जरूरी है कि आपकी कंपनी का हर एक पैसा का हिसाब-किताब सही हो। चाहे वो आमदनी हो या खर्च, सब कुछ अच्छे से रिकॉर्ड किया जाये। ताकि बाद में सभी प्रकार के Compliances समय पर पूरे किये जा सके, और कंपनी को सही से चलने के MIS रिपोर्ट मिल सके।

4 Statutory Register at Registered Office

कंपनी के पंजीकृत कार्यालय पर एक Statutory रजिस्टर होना चाहिए, जिसमें कंपनी के सभी शेयरधारकों, डायरेक्टर्स और अन्य संबंधित व्यक्तियों की सभी डिटेल लिखी होती है। इसी रजिस्टर में कंपनी में होने वाली मीटिंग के मिनट्स भी दर्ज किये जाते है ध्यान देने वाली बात ये की MCA के अफसर कभी भी आपके रजिस्टर ऑफिस पर Visit कर सकते है और ऐसा रजिस्टर न मिलने पर फाइन भी लगा सकते हैं।

Regular Compliances

Non-compliance से बचके रहो वरना सरकार कहेगी "यह पेनल्टी मुझे दे दे, ठाकुर!"

जिस प्रकार से हमें हर दिन अपनी ज़िंदगी में कुछ बुनियादी चीज़ों का पालन करना होता है, वैसे ही कंपनियों को भी अपने नियमित अनुपालन (Compliances) पूरे करने पड़ते हैं। पहली बात, ये अनुपालन एक प्रकार की सुरक्षा कवच का काम करते हैं। कैसे? मान लो, आपने अपनी कंपनी में कुछ गलती की और आपकी कंपनी के सभी अनुपालन पूरे हैं, तो तुम्हारी गलती को कुछ हद तक माफ किया जा सकता है। लेकिन अगर वही अनुपालन पूरे नहीं होते, तो भैया, समझो आफत आ गई। दूसरी बात, ये अनुपालन आपकी कंपनी की छवि को भी अच्छा बनाते हैं। आजकल जो व्यक्ति अपना पैसा लगा रहा है, वह पहले जांचता है कि कंपनी कितनी ईमानदार है। अगर वह जानता है कि कंपनी अपने सभी अनुपालन पूरे करती है, तो उसे भरोसा रहता है। तीसरी बात, समय-समय पर अनुपालन पूरे करने से लेट फीस और जुर्माना भी बचता है। जैसे स्कूल में लेट आने पर सजा मिलती थी, वैसे ही कंपनी को भी लेट अनुपालन करने पर जुर्माना देना पड़ता है। चौथी बात, जब तुम अन्य कंपनियों से व्यापार करते हो, तो वह तुमसे यही जानना चाहते हैं कि तुम्हारी कंपनी के सभी अनुपालन पूरे हैं या नहीं। आखिरी बात, जब भी किसी सरकारी विभाग ने तुम्हारी कंपनी की जाँच की, तो अगर तुम्हारे पास सभी अनुपालन पूरे होते हैं, तो तुम्हें चिंता करने की जरूरत नहीं होती। एक कंपनी को अपने नियमित अनुपालन समय-समय पर पूरे करने चाहिए, ताकि वह अपनी ज़िंदगी में सुख-शांति से चल सके।

1 Director KYC

'KYC' मतलब 'Know Your Customer', लेकिन जब हम कंपनी के संदर्भ में इसे देखते हैं, तो यहाँ 'Customer' की जगह 'Director' आता है। हर साल, कंपनी के सभी डायरेक्टर्स को अपनी जानकारी अपडेट करनी होती है। इससे यह सुनिश्चित होता है कि डायरेक्टर की सभी विवरण Updated और सही हैं।

2 AGM & Board Meetings

जैसा कि नाम से ही पता चलता है, AGM (Annual General Meeting) हर साल होती है जहाँ कंपनी के सभी शेयरहोल्डर मौजूद होते हैं। यहाँ पर कंपनी के वार्षिक प्रगति की जानकारी दी जाती है। ऑडिटर की नियुक्ति पर भी विचार किया जाता है, वहीं बोर्ड की बैठकों में डायरेक्टर्स कंपनी के महत्वपूर्ण निर्णय लेते हैं।

3 MGT-7 & AOC-4

MGT-7 वार्षिक रिटर्न है जिसे हर कंपनी को प्रस्तुत करना होता है। इसमें कंपनी के सभी मुख्य विवरण शामिल होते हैं। AOC-4, वह फार्म है जिसे कंपनी को अपने वार्षिक लेखा और वित्तीय जानकारी जैसे Profit & Loss स्टेटमेंट, बैलेंस शीट, Cash-Flow & Fund-Flow इत्यादि को दर्ज करवाने के लिए जमा करना होता है।

4 Additional Compliances for Nidhi Companies

इन अनुपालनों में से सबसे महत्वपूर्ण 'NDH' फार्म है। NDH-1 वार्षिक रूप से जमा होता है और यह सदस्यता और ऋण प्रदान की विवरण प्रदान करता है। अगर कोई निधि कंपनी निर्धारित आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर पा रही होती, तो इसे NDH-2 में दर्ज करना होता है जिसमें वह स्पष्ट करती है कि वह आवश्यकताओं को क्यों नहीं पूरा कर पा रही है। वहीं, NDH-3 हर साल कंपनी की प्रगति की जानकारी के लिए जमा होता है।

Penalty of Non-Compliances

Compliance नहीं किये तो पेनल्टी कहेगी "स्वागत नहीं करोगे हमारा" ?

भारतीय कंपनी अधिनियम में इन स्टार्टअप्स को कुछ अनिवार्य अनुपालन भी करने पड़ते हैं। अगर वे इस पर ध्यान नहीं देते, तो बाद में उन्हें जुर्माना भी भरना पड़ सकता है। अब सोचो, आपके सपने की स्टार्टअप कंपनी शुरू हो गई, पर कानूनी फार्मालिटीज तुमने Sideline कर दी। आगे चलकर, ये छोटी-छोटी चूकें तुम्हें बड़ी मुश्किल में डाल सकती हैं। जैसे, अगर तुमने ऑडिटर की नियुक्ति नहीं की, या ADT-1 फॉर्म नहीं जमा किया। तो उसके जुर्माना की राशि समय के साथ बढ़ती जाती है। पहले 30 दिनों में दोगुना, फिर 60 दिनों में चारगुना और इस तरह बढ़ते जा रही है। क्या तुम जानते हो कि DIR-3 KYC फॉर्म समय पर नहीं जमा करने पर ₹5000 का जुर्माना लग सकता है? और यही स्थिति MGT-7 और AOC-4 फॉर्म के साथ भी है। स्टार्टअप्स के लिए, जो पहली बार उद्यमिता की दुनिया में कदम रख रहे हैं, ये जुर्माने बड़ा बोझ साबित हो सकते हैं। इसलिए, अगर तुम भी स्टार्टअप की दुनिया में कदम रख रहे हो, तो इन अनुपालनों को ध्यान से पढ़ो और जुर्माने से बचने के लिए उन्हें समय-समय पर पूरा करो। समय पर अनुपालन करने से जो संतुष्टि मिलती है, वही असली लाभ है। तो, स्टार्टअप करो, धन्धा करो, लेकिन कानूनी फार्मालिटीज को कभी भी नजरंदाज मत करो

1 Fail to Appoint an Auditor

ADT-1 फॉर्म को समय सीमा के बाद लेकिन 30 दिनों के भीतर जमा करने पर, सामान्य फ़ाइलिंग शुल्क का दो गुना देरी का शुल्क लगेगा। अगर फॉर्म 30 दिनों के बाद और 60 दिनों के भीतर जमा किया जाता है, तो देरी का शुल्क सामान्य शुल्क का चार गुना होगा। अगर फॉर्म समय सीमा के 60 दिनों के बाद जमा किया जाता है, तो देरी का शुल्क सामान्य शुल्क का छह गुना होगा।

2 Fail to Commence Business

अगर आप 30 दिनों के अंदर फॉर्म जमा करते हैं, तो आपको सामान्य शुल्क का दो गुना चुकाना होता है। 30 दिनों से अधिक लेकिन 60 दिनों से अधिक न होने पर, आपको सामान्य शुल्क का चार गुना देना होता है। 60 दिनों से अधिक लेकिन 90 दिनों से अधिक न होने पर, शुल्क छह गुना होता है। अगर आप 90 दिनों से अधिक लेकिन 180 दिनों से अधिक समय तक जमा नहीं करते हैं, तो आपको सामान्य शुल्क का दस गुना चुकाना होता है। और अगर 180 दिनों से अधिक समय बीत जाता है, तो आपको सामान्य शुल्क का बारह गुना चुकाना पड़ता है।

3 Fail to Update Director KYC

फॉर्म DIR-3 KYC को अगर संबंधित वित्तीय वर्ष की निर्धारित तिथि (30th September) के अंदर जमा किया जाता है, तो कोई शुल्क नहीं लगता। अगर निर्धारित तिथि के बाद जमा किया जाता है और जिनके DIN को 'DIR-3 KYC जमा नहीं करने के कारण निष्क्रिय' किया गया हो, उन्हें 21 सितंबर से 5 अक्टूबर 2018 तक (दोनों दिन समेत) ₹500 (पांच सौ रुपये) शुल्क चुकाना होगा। 6 अक्टूबर के बाद, ₹5000 (पांच हजार रुपये) का शुल्क चुकाना होगा।

4 Fail to File Annual Compliances

कंपनियों को हर साल अपनी वार्षिक रिपोर्ट और लेखा-परीक्षा की रिपोर्ट जमा करनी होती है। अगर कंपनी AOC4 और MGT-7 फ़ाइल नहीं करती है तो फॉर्म MGT-7 ना जमा करने का दंड है ₹100 (एक सौ रुपये) प्रतिदिन देरी के लिए और फॉर्म AOC-4 ना जमा करने का भी जुर्माना है ₹100 (एक सौ रुपये) प्रतिदिन देरी के लिए। इसलिए, कंपनी को सुनिश्चित करना चाहिए कि इस फॉर्म में वित्तीय विवरण प्रतिवर्ष समय से पहले जमा किया जाए।

Myths and truth

Myth: कंपनी बनाना बहुत मुश्किल है। बहुत से लोग सोचते हैं कि कंपनी शुरू करना एक बड़ा काम है यह सिर्फ उन लोगों के लिए है जिनके पास ढेर सारा पैसा, संपर्क और व्यवसायिक अनुभव है।

Truth: कंपनी शुरू करने के लिए आवश्यक नहीं कि तुम्हारे पास सब कुछ पहले से हो। हां, जोखिम होता है, पर ज़िंदगी में कुछ भी पक्का नहीं है, है ना? बहुत सारे सफल व्यवसायी छोटी शुरुआत से शुरू हुए थे, बिना बड़े निवेश और ज्यादा जानकारी के। वे बस अपने विचार और उत्साह के साथ आगे बढ़े। धीरे-धीरे, वे सिखते गए, संपर्क बनाए और अपने व्यापार को विकसित किया। तो अगर तुम्हारे मन में भी एक आइडिया है, तो डरो मत। शुरुआत में छोटे कदम उठाओ, अपनी स्थिति को समझो और ज़रूरी संसाधनों को जोड़ो। धीरे-धीरे, तुम भी अपने लक्ष्य की पहचान बना सकते हो। याद रखो, हर बड़ी सफलता की शुरुआत एक छोटे से विचार से होती है। तो, अगर तुम में उत्साह और जज्बा है, तो कंपनी बनाना इतना मुश्किल नहीं है जितना लोग सोचते हैं। बस, सही मार्गदर्शन और मेहनत चाहिए।

Myth: सरकारी प्रक्रिया में बहुत समय लगता है।

Truth: डिजिटल भारत में, सरकारी प्रक्रियाएँ हुई हैं बेहद सरल और तेज़। कंपनी शुरू करने के लिए आपको कुछ स्टेप्स की पालना करना होता है, इन सभी प्रक्रियाओं को ऑनलाइन पुरे किया जा सकता है, और आमतौर पर यह २-3 हफ्तों में ही हो जाता है।

Myth: कंपनी बनाने के लिए बड़ा निवेश चाहिए।

Truth: कंपनी बनाने के लिए बड़ा निवेश की यह आफवाह बिल्कुल ग़लत है। हाँ, कुछ पैसे की आवश्यकता होती है, लेकिन यह सबकुछ कंपनी के प्रकार और आपकी योजना पर निर्भर करता है।

Myth: सभी कंपनियों को टैक्स में छूट मिलती है।

Truth: कुछ छूट और इन्सेन्टिव्स का मामूला प्रत्येक कंपनी के प्रकार और गतिविधियों पर निर्भर करता है। सरकार विभिन्न क्षेत्रों और क्षेत्रों में निवेश को प्रोत्साहित करने के लिए विभिन्न कदम उठाती है, जैसे 'Startup India' और 'Make in India' योजनाएं।

Myth: पहले साल में नोटिस आ जाएगा अगर कुछ गलत हुआ।

Truth: अगर तुम सही तरीके से काम कर रहे हो, तो इस अफवाह से कोई गंभीर समस्या नहीं होती। पहले साल में कंपनी को टैक्स देने की कोई जरूरत नहीं होती, क्योंकि शुरुआती चरण में अक्सर कंपनी को कोई लाभ नहीं होता।

Myth: एक अच्छी टीम के बिना कंपनी संचालित नहीं हो सकती।

Truth: यह बात सही है कि एक प्रशंसनीय और समर्पित टीम
का होना व्यवसाय के लिए महत्वपूर्ण है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि शुरुआती चरण में एक बड़ी टीम की जरूरत होती है। कुछ बड़ी कंपनियां भी गैरेज से शुरू हुई थीं। आप शुरुआत में अकेले भी कंपनी चला सकते हैं और जब आपका व्यापार बढ़ने लगता है, तो आप टीम बढ़ा सकते हैं। बड़ी टीम की ज़रूरत तब होती है जब आपका व्यवसाय बड़ा होता है और आपके पास अधिक संसाधन होते हैं।

Myth: बिना ऑफिस के कंपनी नहीं चल सकती।

Truth: वर्क फ्रॉम होम और वर्चुअल ऑफिस के जमाने में ऐसा सोचना गलत होगा।

Myth: कई लोगों के मन में यह धारणा होती है कि जब वे अपनी कंपनी शुरू करते हैं, तो उनकी जिंदगी का सब कुछ सेट हो जाता है। वे सोचते हैं कि अब वे अपनी मर्जी से काम कर सकते हैं, और किसी को जवाब देने की आवश्यकता नहीं है।

Truth: कंपनी को शुरू करने के बाद, आपको उसे बढ़ाने और बनाने में अधिक मेहनत करनी होगी। आपके पास उसे सफल बनाने का जिम्मेदारी होती है, और इसमें काम करने के लिए समय, उर्जा, और संघर्ष की जरूरत होती है। कंपनी शुरू करने के बाद भी, आपको अपनी जिंदगी को संतुलित रूप से चलाना होगा। आपको समय निकालना होगा अपने परिवार और अपनी स्वास्थ्य के लिए, और यह भी याद रखना होगा कि अपने आप को अपग्रेड करने का समय भी जरूरी है। कंपनी शुरू करने से आपके पास एक नया माध्यम होता है अपने लक्ष्यों को हासिल करने का, पर यह अब तुम्हारी मेहनत, निर्णय, और सही दिशा में कदम बढ़ाने पर निर्भर करता है।

Myth: केवल MBA वाले ही कंपनी चला सकते हैं।

Truth: अगर आपके पास बिजनेस आइडिया है और साहस है, तो MBA करने की आवश्यकता नहीं है, लेकिन समझदारी और संघर्ष क्षमता आवश्यक हैं। असली बिजनेस दुनिया को जानकर ही आप एक सफल व्यवसायी बन सकते हैं।

Our Other Publication

Scan & download this booklet

NEUSOURCE STARTUP MINDS INDIA LIMITED

Corporate Office

B-11, Basement, Shankar Garden, Vikaspuri
New Delhi-110018 (India)
Email: Info@neusourcestartup.com
Website: www.neusourcestartup.com
Contact:- +91-7305145145, +91-11-46061463
Branches:- Delhi, Kolkata, Lucknow, Bangalore, Jaipur